नवभारत– २४/१०/२००८

महाराष्ट्र का गौरव है 'एमआईटी'

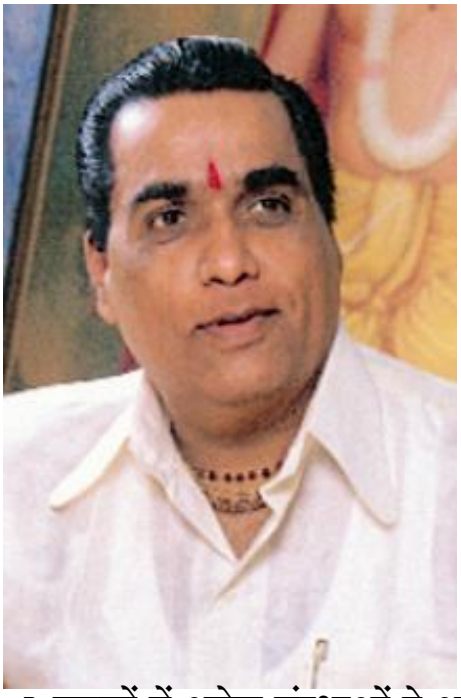

पुणे : पुणे आज सही मायने में 'एज्युकेशन हब' बन गया है । विश्व स्तर की शिक्षा पुणे में उपलब्ध है। अनेक जानी–मानी शिक्षा संस्थाएं पुणे में है. जिनमें सूमचे भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए छात्र–छात्राओं के साथ–साथ ऐशिया, आफ्रिका व युरोप के भी कई ाहरों से आए छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे है। आज सूचे विश्व में पुणे के नाम का डंका बज रहा है। पुणे को पूर्व 'आक्सफर्ड' के नाम से भी जाना जाता है। शिक्षा क्षेत्र में पुणे की जो वर्तमान प्रतिमा है वो किसी एक व्यक्ति व संस्था के कारण नहीं बनी है। गत २–३ दशकों में अनेक संस्थाओं ने अपने अद्वितीय शैक्षिक कार्य से पुणे की गरीमा बढ़ाई है। पुणे की शान में चार चांद लगानेवाली संस्थाओं में सबसे अग्रणी है।

महाराष्ट्र इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.) १९८३ से पूर्व महाराष्ट्र में उपलब्ध अभियांत्रिकी शिक्षा का स्तर कतई संतोषजनक नहीं था। तथा अभियांत्रिकी व अन्य क्षेत्रों को उच्च शिक्षा हेतु पड़ोस के राज्यों में जा रहे थे। राज्य में उच्च स्तर की अभियांत्रिकी शिक्षा देनेवाली संस्थाएं होनी चाहिए ऐसा अनेक तत्कालीन विद्वानों को लगता था। परंतु कोई पहल कर नहीं रहा था। ऐसे में भारत के महान सुपूत्र स्वामी विवेकानंद की विचारधारा में विश्वास व श्रद्धा रखनेवाला वारकरी संप्रदाय परिवार का इंजिनिअर आगे आया और उसने अभियांत्रिकी महाविद्यालय स्थापन करने कर बीड़ा उठाया। इस युवा इंजिनिअर का नाम था प्रा. विश्वनाथ कराड़। अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए उन्होंने अथक प्रयास आरंभ किए तथा जल्द ही उनके प्रयासों को सफलता

मिली और उन्होंने ५ अगस्त १९८३ को पुणे के प्रथम निजी अभियांत्रिकी महाविद्यालय महाराष्ट्र इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.) की स्थापना की। प्रारंभ से ही संस्था अपने अनोखी कार्यप्रणाली व अनुशासनबद्ध शिक्षा पद्धति के कारण सदैव चर्चा में रही। केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि छात्रों के अध्यात्मिक व शारिरीक विकास की ओर भी संस्था ने पर्याप्त ध्यान दिया । संस्था में शिक्षा ग्रहण कर नोकरी व्यवसाय से जुड़ा छात्र संस्था द्वारा किए गए सर्वांगीण विकास के कारण विकास के मार्ग पर निरंतर बढ़ता गया। परिणामस्वरुप संस्ता का नाम भी बढ़ने लगा तथा चंद ही वर्षो में संस्था महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि समूचे भारत में भी प्रसिद्ध हुई। आज २५ वर्षो के बाद संस्था एक विश्वप्रसिद्ध अग्रणी शिक्षा संस्था बन गई है। प्रा. डा. कराड़ के साथ उनके पुत्र प्रा. राहुल कराड़, व उनके भतिजे प्रा. मंगेश कराड़, डा. सुनिल कराड़ ने पूर्ण समर्पित भाव से कार्य कर संस्था को सफलता की चोटीपर पहुंचा दिया है और उनके एकत्रित प्रयासों के कारण संस्था अपने रजतन महोत्सवी वर्ष में स्वर्णिम दिनों की अनुभूति ले रही है।

आज माईर्स, एमआईटी परिवार की पुणे, तलेगाव, लातुर, अंबेजोगाई, अहमदनगर, औरंगाबाद, सोलापुर आदि शहरों में कुल ४५ शिक्षा केन्द्र है। जिनमें ५ अभियांत्रिकी महाविद्यालय, ८ मैनेजमेंट इन्स्टिट्युट, ७ मेडिकल एन्ड फार्मसी इन्स्टिट्यूटस तथा २१ स्कूल व कॉलेजस का समावेश है। इसके अलावा राजनीति में करीयर बनाने के इच्छुक छात्रों के लिए एमआईटी स्कूल ऑफ गव्हमेंन्ट जो की एशिया की इस प्रकार की एकमात्र इन्स्टिट्यूट है। साथ ही वलर्ड पीस सेंटर, आलंदी व एमआईटी वर्ल्ड पीस इको–पार्क व विश्वशांती गुरुकुल, राजबाग का भी समावेश है। संस्था छात्रों के शैक्षिक विकास के साथ–साथ उनके अध्यामिक व व्यक्तित्व विकास को भी अत्याधुनिक महत्त्व देती है। तथा उनके अध्यात्मिक व व्यक्तित्व विकास के लिए सहाय्यकारी साबित होनेवाले अनेक उपक्रम व कार्यक्रम भी समय–समय पर आयोजित करती है। शायद इसिलिए एमआईटी से शिक्षा पूर्ण कर चुके छात्रों की जबरदस्त मांग रहती है, तथा ९० प्रतिशत से अधिक छात्रों को शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही कैम्पस इन्टरव्ह्यू के जरीए नौकरीयां मिल जाती है। संस्था अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का भी बखूबी निर्वाह करती है। वर्ल्ड पीस सेंटर के माध्यम से सभी जाती धर्म के नागरिकों में आपसी भाई चारा व एकता व सर्वधर्म समभाव की भावना को बढ़ाने

का कार्य संस्था करती है। इसके लिए विश्व के अनेक प्रसिद्ध विद्वान, धर्मपंडित तथा समाजसेवांओं के प्रवचन, भाषण आदी कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। उपरोक्त सभी बातों के कारण एम. आई. टी. ने छात्रों में ही नहीं बल्कि तमाम जनमानस में अपनी एक अलग प्रतिमा बनाई है।